

गुरु नानक – सबद ४८
सभ रस मिठे मंनिऐ सुणिऐ सालोणे ॥
राग सिरिराग, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १६

सभ रस मिठे मंनिऐ सुणिऐ सालोणे ॥
खट तुरसी मुख बोलणा मारण नाद कीए ॥
छतीह अमृत भाउ एक जा कउ नदर करेइ ॥१॥
बाबा होर खाणा खुसी खुआर ॥
जित खाधै तन पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥
रता पैनण मन रता सुपेदी सत दान ॥
नीली सिआही कदा करणी पहरण पैर धिआन ॥
कमरबंद संतोख का धन जोबन तेरा नाम ॥२॥
बाबा होर पैनण खुसी खुआर ॥
जित पैधै तन पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥
घोड़े पाखर सुइने साखत बूझण तेरी वाट ॥
तरकस तीर कमाण सांग तेगबंद गुण धात ॥
वाजा नेजा पत सिउ परगट करम तेरा मेरी जात ॥३॥
बाबा होर चड़णा खुसी खुआर ॥
जित चड़िऐ तन पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥
घर मंदर खुसी नाम की नदर तेरी परवार ॥
हुकम सोई तुध भावसी होर आखण बहुत अपार ॥
नानक सचा पातिसाह पूछ न करे बीचार ॥४॥
बाबा होर सउणा खुसी खुआर ॥
जित सुतै तन पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥४॥७॥

सार: सांसारिक उपलब्धियों से प्राप्त सुख अस्थायी और भ्रमपूर्ण होता है। बाहरी सफलता से मिलने वाला संतोष अक्सर उसके बाद आने वाले गहरे खालीपन को छिपा देता है। जबकि हम उस समय अपने कार्यों की उपलब्धियों में कुछ पल आनंदित हो सकते हैं, हमारा शरीर श्रम, दर्द

और थकावट का भारी बोझ सहता है। इसी तरह, प्रसिद्धि या सफलता की बेचैनी में, मन इच्छा, लगाव और नकारात्मक विचारों के जाल में उलझ जाता है, जिससे स्पष्टता और शांति धुंधली हो जाती है।

सभ रस मिठे मंनिऐ सुणिऐ सालोणे ॥

जब मन प्रकृति की इच्छा को स्वीकार कर लेता है तब सभी अनुभव मधुर लगते हैं, जबकि उनका पालन करना नमकीन स्वाद जैसा लगता है।

खट तुरसी मुख बोलणा मारण नाद कीए ॥

मुँह से निकलने वाले अच्छे शब्द खट्टे-मीठे स्वाद के समान होते हैं और संगीत की मधुर ध्वनि मसालेदार स्वाद के समान होती है। यह जीवन की भावनात्मक, मानसिक और इंद्रिय परतों के साथ जुड़ने के लिए एक रूपक है, जो विभिन्न स्वादों का आनंद लेने के समान है।

छतीह अमृत भाउ एक जा कउ नदर करेइ ॥ १ ॥

छत्तीस दिव्य अमृत, एक कायनाती ऊर्जा की भक्ति के प्रति समर्पण से उत्पन्न होते हैं जिसे आत्म-चिंतन की कृपा से महसूस किया जा सकता है। (१)

बाबा होर खाणा खुसी खुआर ॥

हे ज्ञानी, सांसारिक भोग से प्राप्त सभी सुख अंततः व्यर्थ हैं।

जित खाधै तन पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥

जब इनका सेवन किया जाता है जिससे शरीर को दर्द होता है और मन बुरे विचारों से ग्रस्त होता है। (१)(विराम)

रता पैण मन रता सुपेदी सत दान ॥

जब मन प्रेम को अपनाता है तो यह धार्मिक लाल वस्त्र धारण करने के समान है। उदारता अपनाना सफेद धार्मिक वस्त्र पहनने के समान है।

नीली सिआही कढ़ा करणी पहरण पैर धिआन ॥

नकारात्मक इरादों को त्यागना नीले धार्मिक वस्त्र पहनने के समान है। हर व्यक्ति को अपने जीवन में भक्ति को अपना परिधान बनाना चाहिए।

कमरबंद संतोख का धन जोबन तेरा नाम ॥२॥

संतोष कमरबंद के समान है जो सब कुछ जोड़े रखता है। आत्म-चिंतन में ही सच्चा धन और यौवन है। (२)

बाबा होर पैनण खुसी खुआर ॥

हे ज्ञानी, वस्त्रों से मिलने वाला सुख अंततः व्यर्थ है।

जित पैधै तन पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥

सु-सज्जित होने पर शरीर पीड़ा सेहता है तथा मन बुरे विचारों से ग्रस्त होता है। (१)(विराम)

घोड़े पाखर सुइने साखत बूझण तेरी वाट ॥

आत्म-बोध के मार्ग को समझना वैसा ही है जैसे लोहे की ढाल तथा सोने के आभूषणों से सुसज्जित घोड़ों का स्वामी होना।

तरकस तीर कमाण सांग तेगबंद गुण धात ॥

सद्गुण धनुष, बाण, तरकश, तलवार तथा म्यान के स्वामी होने के समान हैं।

वाजा नेजा पत सिउ परगट करम तेरा मेरी जात ॥३॥

सम्मान के साथ पहचाना जाना, ढोल और ध्वज का मालिक होने के समान है। करुणा ही मेरी सामाजिक प्रतिष्ठा का सार है। (३)

बाबा होर चड़णा खुसी खुआर ॥

हे ज्ञानी, उपलब्धियों से मिलने वाला सुख भी अंततः व्यर्थ है।

जित चड़िऐ तन पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १॥ रहाउ ॥

ऐसी उपलब्धियाँ, शरीर को कष्ट देती हैं और मन को बुरे विचारों से ग्रस्त करती हैं, निरर्थक हैं।

(१)(विराम)

घर मंदर खुसी नाम की नदर तेरी परवार ॥

आत्म-साक्षात्कार की खोज घर और हवेली के मालिक होने के समान ही आनंददायक है और सर्वव्यापिता को समझने की क्षमता एक परिवार का सुख होने के समान है।

हुकम सोई तुध भावसी होर आखण बहुत अपार ॥

प्रकृति की शक्ति सभी के कल्याण के लिए है, लेकिन इसके असली सार को शब्दों में बयान करना असंभव है।

नानक सचा पातिसाह पूछ न करे बीचार ॥ ४॥

नानक कहते हैं, सच्चा राजा, सर्वव्यापी ऊर्जा स्वतंत्र है और इसे किसी सलाह की आवश्यकता नहीं। (४)

बाबा होर सउणा खुसी खुआर ॥

हे ज्ञानी, जड़ता से मिलने वाला सुख अंततः हानिकारक है।

जित सुतै तन पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥ १॥ रहाउ ॥ ४॥ ७॥

जो अज्ञानता में डूबे हैं, उनके शरीर को पीड़ा का अनुभव होता है और उनका मन बुरे विचारों से ग्रस्त होता है। (१)(विराम)(४)(७)

तत्त्व: गुरु नानक ने प्रभावशाली तरीके से बताया है कि केवल सर्वव्यापी एकता को अपनाने से ही सच्चा और स्थायी सुख प्राप्त होता है। सच्चे ज्ञानी समझते हैं कि शरीर और मन केवल उपकरण हैं। जबकि शरीर थक सकता है और मन विचलित हो सकता है, वास्तविक खुशी सुख और दर्द के चक्र से परे होती है जिससे गहन आंतरिक शांति मिलती है। सक्रिय रूप से ज्ञान, करुणा और आत्म-जागरूकता की तलाश करके हम अपने मन को नकारात्मकता और क्षणिक

सुखों से मुक्त कर सकते हैं जिससे स्थायी संतुष्टि और पूर्णता की गहरी भावना का मार्ग प्रशस्त होता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com